શ્રી શત્રુંજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧

સા વિદ્યા યા વિમુક્તયે

સમ્યગ્જ્ઞાન પરિચય Hindi

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

એનરોલમેન્ટ નંબર ____ ४ ગામ ____

વિદ્યાર્થીનું નામ ____

	પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા	પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં
(૧)	दर्शन मोहनीय	अचक्षु दर्शनावरणीय
(૨)	लवण समुद्र	श्री अजितनाथ
(૩)	तिसरा परिच्छेद	निर्जरा तत्व
(૪)	ज्ञानोपयोग	देवलोक
(૫)	ब्रम्हचर्य	क्षायोपशमिक
(૬)	वेदक	केवलदर्शन
(૭)	स्वल्प परिग्रह	दर्शनावरणीय
(૮)	थीण द्धी निद्रा	वैशाख सुद ११
(૯)	श्रुतज्ञान	श्री नेमिनाथ
(૧૦)	क्षायिक	अशाता
(૧૧)	पर विवाहकरण	अपर परिगृहिता गमन
(૧૨)	दर्शनावरणीय	दाहिना
(૧૩)	शाला	इंद्र की तरह
(૧૪)	जिनशासन	देवाधिदेव का दर्शन
(૧૫)	अवधिदर्शन	पलंग जैसा लंब चौरस
(૧૬)	स्वदारा संतोष	
(૧૭)	औपशमिक	
(૧૮)	समवसरण	
(૧૯)	मदिरापान	
(૨૦)	शीलव्रत	

	પ્રશ્ન-૨ (ચાલુ)
(૫)	सात
(૬)	शब्दोसे
(૭)	धनुष्य
(૮)	शोक
(૯)	चक्षु
(૧૦)	करने के लिये
(૧૧)	करोड
(૧૨)	अर्ध शुद्ध
(૧૩)	छियानवे
(૧૪)	वक्षस्कार पर्वत
(૧૫)	सोलह
(૧૬)	श्रेष्ठ
(૧૭)	भेद
(૧૮)	कल्याणकारी
(૧૯)	जीव
(૨૦)	अधिपति

	પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ
(૧)	96
(૨)	1000
(૩)	96
(૪)	18 वर्ष
(૫)	57
(૬)	4
(૭)	34
(૮)	2
(૯)	66
(૧૦)	1,00,000 / 1 लाख

	પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ
(૧)	लेखनकला
(૨)	मनुष्य
(૩)	विषयोंमे
(૪)	स्थिर

	પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો		
(૧)	7	(૬)	1
(૨)	10	(૭)	4
(૩)	6	(૮)	3
(૪)	8	(૯)	5
(૫)	2	(૧૦)	9

	પ્રશ્ન-૬ ✓ કે ×	પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય ક્યા પાને છે તે નંબર
(૧)	×	19
(૨)	✓	11
(૩)	×	5
(૪)	×	23
(૫)	✓	10
(૬)	×	11
(૭)	✓	7
(૮)	✓	15
(૯)	×	9
(૧૦)	×	11

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ	=	કુલ ગુણ

રીમાર્ક ____ તપાસનારની સહી ____

प्रश्न - ८ (1) जंबुद्वीपके वासक्षेत्र - जंबुद्वीपमें कुल सात वासक्षेत्र है। जंबुद्वीपके के मध्य में महाविदेह क्षेत्र है। महाविदेह के उत्तर में रम्यकक्षेत्र, हिरण्यवंत क्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र है। दक्षिण में हरिवर्ष,
(१) हिमवंत और भरत क्षेत्र है। महाविदेह क्षेत्र एक लाख योजन पूर्व पश्चिम लंबा है। दोनो बाजू के क्षेत्रोकी लंबाई समान नही है। सातो क्षेत्रो के नाम शाश्वत है। उस क्षेत्र के अधिष्ठायक देवो के नामसे क्षेत्र का नाम है। इन सात क्षेत्रो में से महाविदेह क्षेत्र (देवकुरु और उत्तरकुरु को छोडकर) भरतक्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र ये तीनो कर्मभूमियाँ है। इन सात क्षेत्रो में से बाकी रहे हुए हिमवंत, हरिवर्ष, रम्यक और हैरण्यवंत ये ४ क्षेत्र अकर्मभूमियाँ है। जहां असि, मसि, कृषी का व्यवहार चलता हो, समाज व्यवस्था हो, लग्न भोजन एवं धर्म व्यवस्था हो उसे कर्मभूमि कहते है

(२) पाँच निद्रा - दर्शनावरणीय कर्म के उदय से निद्रा आती है। उसके पांच प्रकार है।
1) निद्रा - सहजतासे धीमी आवाजसे जाग जाता है, सरलता से जाग जाय वह निद्रा कहलाती है
2) निद्रा-निद्रा - बहुत जगाने के पश्चात मुश्किल से जागृत होता है, उसे निद्रा-निद्रा कहते है
3) प्रचला - खडे खडे या बैठे बैठे नींद लेना वह प्रचला कहलाती है।
4) प्रचला-प्रचला - प्रचला से गहरी, चलते चलते भी नींद ले वह प्रचला-प्रचला कहलाती है
5) स्त्यानर्द्धि निद्रा - दिन में सोचा हुआ कार्य जिस निद्रा के वशीभूत होकर जीव रात्री में करता है स्त्यानर्द्धि निद्रा कहते है। वज्रऋषभनाराच संघयनवाले को यह निद्रा हो तब अर्ध चक्रवर्ती से आधा बल होता है। सेवार्त संघयनवाले का दुगणा-तिगुणा बल रहता है। ऐसी निद्रा वाला जीव प्रायः नरक में जाता है

3. (3) परिग्रह परीमाण व्रत - श्रावक के १२ व्रतो मे ५वा व्रत है। यह नौ प्रकार है। (1) खित्त - यानि क्षेत्र परिग्रह परिमाणव्रत क्षेत्र यो खुली भूमी उगाने की भूमी, जगह, बगीचा विशेष रूप से जानना (2) घरपरिग्रह - जो एक भूमि (मंजिल से लेकर सात मंजिल की हवेली) तथा हार वखार विशेष एवं वाडी बाग बंगला विशेष सब घरपरिग्रह है। (3) कुविय याने कुप्य परिग्रह जो सुवर्ण और चांदी को छोडकर अन्य सारी धातुये जानना जैसे की तांबा, पीतल, कांसा, सीसा, लोहा, कलई टीन भरत इ. धातु के बर्तन थाली कटोरी, कलश तथा खाट पाटले, वस्त्र वगैरह घरसमान जानना (4) धन परिग्रह - गणिम - यानि सुपारी, नारियल आदि जो गिनकर बेचे जाते है। धरिम - जो गुड घी किराणे की वस्तुये आदि जो तोलकर बेचे जाते है। परिच्छेद - स्वाना, रूपा, जवाहरात, वस्त्र नाणे आदि परीक्षा करके बेचे जाते है मेविय - धन जो दूध वगैरे माप कर बेचे जाते है। (5) धन्न यानि - धान्य परिग्रह यह २४ प्रकार का धान्य जानना। (6) हिरण परिग्रह - रूपा कच्चा यानि सिक्के बिना का रौप्य जानना (7) सुवर्ण परिग्रह - यह सिक्के बिना का स्वर्ण जानना (8) दुप्पय परिग्रह - मूल्य देकर खरीदे हुए दास दासी द्विपद मनुष्य जानना (9) चउप्पय परिग्रह - गाय, भैंस, घोडे, बैल, बकरी वगैरह चौपद जीव जानना। इन नौ प्रकार के परिग्रह का विवेकी पुरुषो को परिहार करना चाहिये।
4. औपशमिक सम्यक्त्व - यह अपौद्गलिक - अशुद्ध सम्यक्त्व है। तीन दर्शन मोहनीय सत्ता मे होते है, परंतु आत्मा इन तीनो को ऐसा दबाती है कि उनकी एक भी प्रकृति उदय में न आवे और आत्मा की रुचि का हनन, अपहरण न हो सके। उस समय आत्मा जिस सम्यग् दर्शन से युक्त होता वह औपशमिक सम्यक्त्व कहलाता है। जीव को प्रथम इसी सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। इसका समय अन्तर्मुहूर्त का होता है। यह सम्यक्त्व चौथे से ग्यारहवे गुणस्थानक तक होता है
(५) सौधर्मेन्द्र की दैविक रचना - प्रभु महावीर को वंदन करने के लिये दशार्णभद्र राजा अभिमान से बहुत ठाठ-माठ से आये तब अपने साधर्मिक का अभिमान दूर करने हेतु सौधर्मेन्द्रने श्री वीर प्रभु को वंदना करके आते हुए दैविक ऋद्धि की विकुर्वणा की। प्रत्येक के पांच सो और बारह मस्तक ऐसे चौसठ हजार हाथी बनाये. उनके एक एक कुंभस्थल पर आठ आठ दंतशूल और आठ-आठ बावडी, एक एक में एक लाख पंखुडीवाले आठ कमल, हरेक कमल पर एक एक कर्णिका और उसके उपर प्रासादावंतक है, एक एक पंखुडी मे बत्तीस नाटको के साथ गीत गान हो रहे थे। ऐसे विविध आश्चर्यप्रद दृश्यो से अपनी आठ-आठ पटरानीयो के साथ हरेक मे एक एक रूप मे ऐरावत हाथी पर बैठे हुए सौधर्मेन्द्र अत्यंत आनंदपूर्वक बत्तीस नाटक देखते है। इस प्रकार बहुत ही ठाठमाठ वाली रचना कर जब अनेक रूपो को धारण करनेवाला इन्द्र आकाश से नीचे उतरकर प्रभु को वंदन करने लगा तब दशार्णभद्र राजा का अभिमान उतर गया